Quest Journals
Journal of Hindi, Political Science and Home Science
Volume 14 ~ Issue 1 (Nov. – Dec. 2024) pp: 19-21
ISSN(Online) : 2347 – 2305
www.questjournals.org

Research Paper

फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में आंचलिकता और ग्रामीण जीवन

पूजा कुमारी
शोधार्थी
रामचन्द्र चन्द्रवंसी विश्वविद्यालय
नवडीहकला, बिश्रामपुर, पलामू, झारखंड

भूमिका

फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य के ऐसे विशिष्ट कथाकार हैं जिन्होंने भारतीय ग्राम्य जीवन को उसकी सम्पूर्ण जीवंतता, संवेदना, संघर्ष और सांस्कृतिक विविधता के साथ साहित्य में प्रतिष्ठित किया। उन्हें हिंदी साहित्य में आंचलिक उपन्यास का प्रवर्तक माना जाता है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास मैला आँचल हिंदी साहित्य में आंचलिकता का शिखर माना जाता है। रेणु ने विशेष रूप से बिहार के पूर्णिया अंचल के जनजीवन, लोकभाषा, लोकगीत, रीति–रिवाज, जातीय संरचना, आर्थिक विषमता और मानवीय संबंधों को अत्यंत प्रामाणिक रूप से चित्रित किया। परती परिकथा, जुलूस, दीर्घतपा तथा ठुमरी जैसी कृतियाँ भी इसी परंपरा को समृद्ध करती हैं। हिंदी साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु का नाम आंचलिक उपन्यासकार के रूप में अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने अपने साहित्य में भारतीय ग्रामीण जीवन, लोक संस्कृति, लोकभाषा, रीति–रिवाज और सामान्य जनजीवन का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। रेणु ने गाँवों के सुख–दुख, संघर्ष, गरीबी, सामाजिक विषमता तथा मानवीय संवेदनाओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। उनके साहित्य में बिहार के पूर्णिया क्षेत्र की मिट्टी कीसुगंध, वहाँ की बोली–बानी और लोकजीवन की जीवंत झलक मिलती है।रेणु हिंदी साहित्य में आंचलिकता के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं। उनका प्रसिद्ध उपन्यास मैला आँचल हिंदी का प्रथम आंचलिक उपन्यास माना जाता है।

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में जब ग्रामीण जीवन की सजीव और बहुआयामी अभिव्यक्ति की चर्चा होती है, तब फणीश्वरनाथ रेणु का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। मुंशी प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद की मजबूत नींव रखी, और रेणु ने उसे क्षेत्रीय संस्कृति, लोकभाषा और आंचलिक चेतना से समृद्ध किया। रेणु का साहित्य केवल गाँव का वर्णन नहीं है, यह गाँव की आत्मा, उसकी भाषा, उसकी खुशियाँ, उसकी विडंबनाएँ और उसके संघर्षों का जीवंत दस्तावेज है।

फणीश्वरनाथ रेणु का जीवन परिचय

- जन्म रू 4 मार्च 1921
- जन्मस्थान–औराही हिंगना, जिला पूर्णिया (अब बिहार के अररिया क्षेत्र)
- मृत्यु– 11 अप्रैल 1977
- प्रमुख विधाएँ – उपन्यास, कहानी, संस्मरण, रिपोर्ताज
- प्रमुख कृतियाँ– मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, दीर्घतपा, ठुमरी, पंचलाइट
- साहित्यिक पहचान – आंचलिक उपन्यासकार, जनपक्षधर कथाकार

आंचलिकता का अर्थ

आंचलिकता का अर्थ है किसी विशेष क्षेत्र के जनजीवन, भाषा, संस्कृति, रहन–सहन, लोकगीत, परंपराओं और सामाजिक परिस्थितियों का साहित्य में चित्रण। जब साहित्यकार किसी क्षेत्र विशेष की वास्तविक परिस्थितियों को उसी के स्थानीय रंग में प्रस्तुत करता है, तब उसे आंचलिक साहित्य कहा जाता है।रेणु ने अपने साहित्य में बिहार के ग्रामीण अंचलों को केंद्र में रखकर वहाँ के जीवन का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया।

रेणु के साहित्य में आंचलिकता

रेणु के साहित्य में आंचलिकता केवल किसी क्षेत्र का वर्णन नहीं, बल्कि भारतीय लोकजीवन की गहन सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति है। उन्होंने सिद्ध किया कि किसी छोटे भूभाग की कथा भी सार्वभौमिक मानवीय अनुभवों को व्यक्त कर सकती है। इस दृष्टि से रेणु हिंदी साहित्य में आंचलिकता के सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली रचनाकार हैं।

1. लोकभाषा का प्रयोग

रेणु ने अपने साहित्य में स्थानीय बोलियों और लोकभाषा का अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग किया है। मैथिली, भोजपुरी, मगही तथा ग्रामीण शब्दावली के प्रयोग से उनका साहित्य अधिक जीवंत बन गया है।उनकी भाषा कृत्रिम न होकर सहज, सरल और लोकजीवन से जुडी हुई है। यही कारण है कि पाठक उनके साहित्य से आत्मीय जुडाव महसूस करता है।

2. **लोक संस्कृति का चित्रण**

रेणु के साहित्य में लोकगीत, मेले, पर्व–त्योहार, विवाह संस्कार, लोकनृत्य और ग्रामीण परंपराओं का सुंदर चित्रण मिलता है।ग्रामीण समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं को उन्होंने अत्यंत स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में गाँव की सामूहिकता और लोकजीवन की आत्मीयता दिखाई देती है।

3. **ग्रामीण परिवेश का सजीव वर्णन**

फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य की सबसे बडी विशेषता ग्रामीण परिवेश का अत्यंत सजीव, स्वाभाविक और प्रामाणिक चित्रण है। उनके यहाँ गाँव केवल कथा की पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि स्वयं एक जीवंत पात्र की तरह उपस्थित होता है। खेत–खलिहान, कच्ची सडकें, नदी–नाले, मेले, हाट–बाजार, लोकगीत, पर्व–त्योहार और ग्रामीण जनजीवन की छोटी–छोटी गतिविधियाँ उनकी रचनाओं में इस तरह चित्रित हैं कि पाठक को लगता है मानो वह स्वयं उस गाँव का हिस्सा हो।

रेणु के साहित्य में ग्रामीण जीवन

1. **किसानों और मजदूरों का जीवन**

रेणु ने किसानों, मजदूरों तथा निम्न वर्ग के संघर्षपूर्ण जीवन को अपने साहित्य का मुख्य विषय बनाया।गरीबी, शोषण, बेरोजगारी और सामाजिक विषमता का चित्रण उनके साहित्य में स्पष्ट दिखाई देता है।

2. **सामाजिक समस्याओं का चित्रण**

ग्रामीण समाज में फैली अशिक्षा, अंधविश्वास, जातिवाद, भ्रष्टाचार और राजनीतिक स्वार्थ को रेणु ने अपने साहित्य में उजागर किया है। वे केवल समस्याओं का चित्रण ही नहीं करते बल्कि मानवीय संवेदनाओं को भी महत्व देते हैं।

3. **मानवीय संवेदनाएँ**

रेणु के पात्र अत्यंत जीवंत और मानवीय हैं। उनके साहित्य में प्रेम, करुणा, सहयोग और मानवीय रिश्तों की गहरी अनुभूति मिलती है।गाँव के सामान्य लोगों के जीवन संघर्ष को उन्होंने बडी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है।

4. **"मैला आँचल" में आंचलिकता और ग्रामीण जीवन**

मैला आँचल रेणु का सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें बिहार के ग्रामीण जीवन का व्यापक चित्रण मिलता है।

इस उपन्यास में

- ग्रामीण संस्कृति
- लोकभाषा
- सामाजिक समस्याएँ
- राजनीतिक परिस्थितियाँ
- किसानों का जीवन
- ग्रामीण चिकित्सा व्यवस्था

  का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया गया है।

डॉ. प्रशांत जैसे पात्रों के माध्यम से रेणु ने गाँव के जीवन और वहाँ की समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

रेणु का साहित्यिक योगदान

फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य के अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट रचनाकार हैं। उन्होंने हिंदी कथा–साहित्य को नई दिशा, नई संवेदना और नई भाषा प्रदान की। उनका साहित्य भारतीय ग्रामीण जीवन, लोकसंस्कृति, जनजीवन की समस्याओं और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज है। उन्हें विशेष रूप से आंचलिक उपन्यास का प्रवर्तक माना जाता है। उनका साहित्यिक योगदान हिंदी साहित्य के इतिहास में स्थायी और अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।फणीश्वरनाथ रेणु ने यह सिद्ध किया कि गाँव का जीवन भी साहित्य का महत्वपूर्ण विषय हो सकता है।उनके साहित्य ने भारतीय ग्रामीण समाज की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत की तथा हिंदी उपन्यास और कहानी साहित्य को नई पहचान दी।

1. आंचलिक उपन्यास को प्रतिष्ठा प्रदान करना

रेणु का सबसे बडा योगदान यह है कि उन्होंने हिंदी साहित्य में आंचलिकता को एक सशक्त साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में स्थापित किया। मैला आँचल को हिंदी का प्रथम पूर्ण विकसित आंचलिक उपन्यास माना जाता है। इसके माध्यम से उन्होंने सिद्ध किया कि किसी क्षेत्र विशेष का जीवन भी सार्वभौमिक साहित्यिक महत्व रखता है।

2. ग्रामीण भारत का प्रामाणिक चित्रण

रेणु ने बिहार के पूर्णिया अंचल के माध्यम से भारतीय गाँवों की वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत किया। किसानों, मजदूरों, स्त्रियों, दलितों और उपेक्षित वर्गों के जीवन–संघर्ष को उन्होंने अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया।

3. लोकभाषा को साहित्यिक गरिमा देना

उन्होंने मैथिली, भोजपुरी, मगही, बंगला और स्थानीय बोलियों का सृजनात्मक प्रयोग किया। इससे हिंदी भाषा अधिक जीवंत, बहुरंगी और लोकधर्मी बनी।

4. लोकसंस्कृति का संरक्षण

रेणु के साहित्य में लोकगीत, लोककथाएँ, मेले, पर्व–त्योहार, विवाह–संस्कार और लोकविश्वास व्यापक रूप से उपस्थित हैं। इस प्रकार उन्होंने भारतीय लोकसंस्कृति को साहित्य में सुरक्षित और प्रतिष्ठित किया।

5. मानवीय संवेदना का विस्तार

रेणु के पात्र साधारण होते हुए भी गहरी मानवीय गरिमा से संपन्न हैं। उनके साहित्य में प्रेम, करुणा, संघर्ष, आशा और सामुदायिकता की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है।

6. सामाजिक यथार्थ और राजनीतिक चेतना

उन्होंने गरीबी, जाति–भेद, बीमारी, शोषण और राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं को उजागर किया। साथ ही स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन की चेतना को भी अभिव्यक्त किया।

7. कथा–शिल्प में नवाचार

रेणु ने रिपोर्ताज शैली, बहुपात्रीय संरचना, लोकधर्मी संवाद और चित्रात्मक वर्णन के माध्यम से हिंदी उपन्यास को नई कलात्मक ऊँचाई प्रदान की।

8. प्रमुख कृतियाँ

- मैला आँचल
- परती परिकथा
- जुलूस
- दीर्घतपा
- पंचलाइट
- तीसरी कसम

उपसंहार

फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य के महान आंचलिक कथाकार हैं। उनके साहित्य में भारतीय गाँवों की मिट्टी की सोंधी गंध, लोक संस्कृति की आत्मीयता और सामान्य जनजीवन का यथार्थ रूप देखने को मिलता है।उन्होंने ग्रामीण जीवन की समस्याओं, संघर्षों और मानवीय संवेदनाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। इसी कारण उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक और लोकप्रिय है।

रेणु का साहित्य भारतीय ग्रामीण संस्कृति का जीवंत दस्तावेज माना जाता है।

संदर्भ सूची

- मैला आँचल–फणीश्वरनाथरेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 1–45,46–120,121–210।
- परती परिकथा–फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 35–140,141–260,261–390।
- इतिहास और आलोचना–नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 210–225।